ISSN : 2393-9362

साहित्य सरस्वती

Peer Reviewed Journal

वर्ष–तेरह, अंक 50 । अप्रैल–जून 2026

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय
सागर (म.प्र.)

सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट सागर के पदाधिकारी गण

ऊपर की पंक्ति (बाएँ से दाएँ) - पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी (सचिव), डॉ. सुरेश आचार्य (न्यासी)
श्री लक्ष्मी नारायण यादव पूर्व सांसद सदस्य लोकसभा (न्यासी), श्री के. के. सिलाकारी, एडवोकेट (अध्यक्ष)
श्री जी.एल. छत्रसाल (सह सचिव), डॉ. मीना पिम्पलापुरे (न्यासी)
नीचे की पंक्ति (बाएँ से दाएँ) - श्री जवाहरलाल चौरसिया (न्यासी), श्री जगदीश माहेश्वरी (न्यासी)
डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय (न्यासी), श्री आर. एस. यादव (न्यासी)

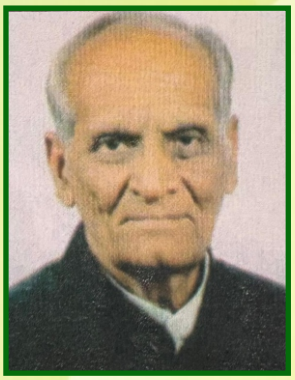

अध्यक्ष
के.के.सिलाकारी (एड.)

साहित्य सरस्वती के
सहृदय पाठकों को
गुड फ्राइडे,
अंबेडकर जयंती,
बुद्ध जयंती और अक्षय
तृतीया परशुराम जयंती की
हार्दिक शुभकामनाएँ।

सचिव
पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष – तेरह, अंक–50, अप्रैल – जून 2026

ISSN-2393-9362, Peer reviewed Journal

प्रधान संपादक
प्रो. सुरेश आचार्य

•

संपादक
डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

•

उप–संपादक
प्रो. पुरुषोत्तम सोनी
प्रो. ऋतु यादव

व्यवस्था एवं परामर्श

- पं. के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- श्री लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी, पूर्व सांसद
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN-2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed Journal वर्ष- तेरह, अंक-50, अप्रैल - जून 2026

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. मधु संधु, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब

प्रो. रूबी जुत्सी, हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय, कश्मीर, भारत

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट, गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन: 07582-243759, मोबाइल: 7067920078

- लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।
- सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।
- रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।

आवरण-सना खान
सुभद्रा ऑफसेट प्रिन्टर्स, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल 9827096843

मुद्रण
सुभद्रा ऑफसेट प्रिन्टर्स, ग्वालियर (म.प्र.)
मोबाइल 9827096843

ISSN - 2393-9362

वर्ष - तेरह, अंक-50, अप्रैल - जून 2026

अनुक्रम

4 सुरेश आचार्य- संपादकीय

6 लक्ष्मी पाण्डेय - हस्तक्षेप

धरोहर

11 मोहनदास करमचंद गाँधी - भाषण : विद्यार्थियों की सभा, बनारस में

17 भगवतशरण उपाध्याय- सूना (निबंध)

23 पं. प्रेमनारायण द्विवेदी - अपना सागर ताल बचाओ (कविता)

लेख

26. डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन - स्वतंत्रता संग्राम में महाकवि सुब्रह्मण्य भारती का योगदान

30 प्रो. विनीत मोहन औदिच्य - सॉनेट काव्य विधा संरचना एवं हिन्दी साहित्य में प्रयोग

35 कुबेर कुमावत - हिन्दी डायरी का रूपविश्लेषणात्मक चिंतन

40 डॉ. नवनाथ गाड़ेकर - आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय भावना : कल और आज

49 डॉ. गोपाल प्रसाद 'पाठक' - आदर्श विद्यार्थी एवं श्रेष्ठ नागरिक

संस्मरण

50 विनोद साव - डॉ. नामवर सिंह की जन्म-शती पर

अनुवादित कहानी

52 चन्द्रमति - वेब साइट (मलयालम कहानी) हिन्दी अनुवाद : एस. तंकमणि अम्मा

कहानियाँ

58 गोपाल माथुर - फूल हरसिंगार के

65 डॉ. रानी दुबे - अम्मा

70 सुषमा मुनीन्द्र - हेरा फेरी

79 इमतियाज गदर - गृहलक्ष्मी

कविताएँ / गज़लें / गीत

16 सुमित्रानंदन पंत

22 केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

57 मुकुल शर्मा

64 गोपाल सिंह नेपाली

69 अज्ञेय

84 कर्नल पंकज सिंह

89 राजेन्द्र राजन

90 अरविंद भट्ट

91 रंजीता भारती 'श्री'

92 दुर्गेश कुमार सराठे 'सजल'

93 दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात'

94 डॉ. जी. एल. छत्रसाल

95 सतीश उपाध्याय

101 नरेश कुमार 'उदास'

विचार

95 अमीर खुसरो

106 राइनेर मारिया रिल्के

लघुकथाएँ

96 मंजरी शुक्ला

97 पुष्पेश कुमार पुष्प

108 निर्मला कर्ण

110 डॉ. चंद्रा चतुर्वेदी

समीक्षाएँ

98 दिव्या प्रसाद - डॉ. रेशमी पाण्डा मुखर्जी 'मानवीय बोध की कलम डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न' के साहित्य का मूल्यांकन'

102 खुदेजा ख़ान - रामस्वरूप दीक्षित तुम्हारी आवाज़ कविता संग्रह

105 डॉ. अवधेश कुमार चंसौलिया - डॉ. प्रतिभा पांडेय- प्रवासी भारतीय कथाकार सुषम बेदी का कथा साहित्य

107 रूबी दास 'अरू' - माधुरी राऊलकर फूलों की ग़ज़ल

34 रचनाकारों से निवेदन

48 पुस्तकें मिलीं

97 पत्रिकाएँ मिलीं

109 परिक्रमा

111 प्रतिक्रिया

सम्पादकीय – सुरेश आचार्य

सींगों और पंजों वाले लोग

आप तुरंत कहेंगे ऐसा नहीं हो सकता । मगर मैं कहूँगा हुजूर होता है। मगर कमाल यह है कि ये सींग और पंजे दिखाई नहीं देते। हाँ जब उनकी चोट लगती है तो एहसास होता है। ये लोग मोहक मुस्कान वाले, घनिष्ठता बनाने में उस्ताद और दाँव मारने के विशेषज्ञ होते हैं। आपसे मित्रता का दावा करने वाले, जब आप कुछ पाने वाले होते हैं – तभी दाँव मारकर अपकी उपलब्धि पर पानी फेर देते हैं। आपकी समझ में आ जाता है कि चोट सींगों की या पंजों की है। इसके पश्चात सहानुभूति का मुखौटा लगाए वे श्रीमान प्रकट होते हैं और आपको हिम्मत बंधाते हैं। ऐसे महानुभावों के लिए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है–

मन मलीन तन सुंदर कैसे।

विष रस भरा कनक घट जैसे।।

पौराणिक मान्यता है कि जीवात्मा चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता है। मनुष्य योनि प्राप्त होने के पूर्व के संस्कार कुछ न कुछ रह जाते होंगे। वे ही सींगों और पंजों के रूप में प्रकट हो जाते होंगे। ज्यों–ज्यों धन, बाहुबल और लोकप्रियता की शक्ति बढ़ती है त्यों – त्यों मनुष्य की राज्यलिप्सा धनलिप्सा और यशलिप्सा बढ़ती है। भारतीय राजनीति की यह अद्‌भुत विसंगति है कि अभी–अभी जिसे माला पहनाकर सत्कार किया हो। मंच से हटते ही उसकी आलोचना शुरू हो जाती है।

अमेरिका–ईरान का युद्ध मोर्चा अभी तक निरंतर है। इसके पीछे भी राज्यलिप्सा और यशलिप्सा हैं। अणु बम स्वयं बनाकर बैठे अमेरिका को यह बिल्कुल पसंद नहीं कि किसी और देश का इस क्षेत्र में दखल हो। खासकर ईरान का । इजराइल और ईरान युद्ध के पीछे अमेरिका की कूटनीति ही है। कहा नहीं जा सकता कि कब युद्ध रुकेगा। अनेक घोषणाएँ सुबह होती हैं और शाम को बदल दी जाती हैं। संसार संशय में है।

ईरान न तो धौंस–धपट में आया और न कूटनीति में, अयातुल्लाह खामेनेई की मृत्यु के बाद कोई खास परिवर्तन तो नजर नहीं आता। ईरान ने हथियार नहीं डाले न आत्मसमर्पण का कोई इरादा किया। ट्रंप साहब की अधिकांश घोषणाएँ व्यर्थ सिद्ध हुईं। उधर रूस–यूक्रेन युद्ध को चलते सालों हो गए। दोनों महाशक्तियों की शक्ति और रुतबे में कमी आई है। खासतौर पर अमेरिका की किरकिरी ज्यादा हुई। महाशक्तियों को अपनी रियासत में परोपकार, जनकल्याण के कार्यों पर अधिक ध्यान देना चाहिए। इधर बदलते हुए राजनैतिक वातावरण में धौंस–पट्‌टी ही प्रमुख राजनैतिक गतिविधि हो गई है।

भारत के पड़ोसी पाकिस्तान की शह पर पहलगाम में आतंकवादियों ने धर्म पूछ कर निहत्थे मासूम पर्यटकों को गोलियों से उड़ा दिया। बदले में भारत ने पाकिस्तान में घुसकर जैसा विकट हमला

किया, उससे पाकिस्तान के होश उड़ गए। 'ऑपरेशन सिन्दूर' नामक यह सैन्य-अभियान अभी जारी है। एक वर्ष पूरा होने पर उसे स्मरण करते हुए बलिदानी सिपाहियों को राष्ट्र ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। हम सब यह महसूस करते हैं कि उसके बाद पाकिस्तानी आतंक का गला सूख गया है। श्री नरेन्द्र मोदी इसके लिए निश्चित ही बधाई के पात्र हैं। आातंक को समाप्त करने की अपनी घोषणा पर अडिग मोदी को अभी-अभी पश्चिम बंगाल ने विधान सभा चुनाव में प्रचंड बहुमत देकर सम्मानित किया है। राजनीति जैसी पवित्र प्रवृत्ति को स्वार्थी लोगों ने बदनाम किया है।

राजनीति तो प्रजा की सेवा के लिए है। जिस राजा की प्रजा दुखी हो उसे राज्य करने का अधिकार नहीं। तुलसीदास ने लिखा है-

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी ।।

मगर क्या करें यह वही मार्ग है जिससे सींगों और पंजों वाले लोग हमारे सामाजिक ताने बाने में आ घुसते हैं और उसे तार तार करने का प्रयास करते हैं। राजनीति से इनको निकाल बाहर करने की जरूरत है। राजनीति अब शिक्षा, समाज, संस्कृति, साहित्य सब पर हावी है। उसके शुद्धिकरण से सारी सफाई संभव होगी। इन दिनों भारत में शुद्धिकरण के ये प्रयास जोरों पर हैं। विकास के प्रयास और राष्ट्रीयता के प्रबल होने से भारत विश्वगुरु के रूप में सामने आ रहा है। बस थोड़े सींगों और पंजों वाले लोगों से सतर्क रहने की जरूरत है।

आमीन।

साहित्य सरस्वती का अंक 50 आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

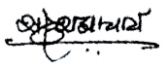

-सुरेश आचार्य
मो. 9826221961

हस्तक्षेप –लक्ष्मी पाण्डेय

कबिरा आप ठगाइये

ऐसे होता है युगान्त
ऐसे ढहती हैं अंतरतम की बुनावटें..
ऐसी होती है अपूरणीय क्षति ।

6 फरवरी 2022 को जब भारत रत्न लता मंगेशकर जी का देहान्त हुआ तो युगान्त होने की अनुभूति हुई लेकिन कहने में संकोच के साथ एक आशा और आश्वस्ति भी थी कि अभी उनकी बहन, उनकी संगीत यात्रा की साथी भारतीय संगीत जगत का एक और अनमोल रत्न आशा भोसले जी वर्तमान हैं। लगा कि लता जी के जाने से बहुत कुछ चला गया लेकिन कुछ महत्वपूर्ण अब भी शेष है। मगर अब 12 अप्रैल 2026 को आशा जी का भी देहावसान हो गया। माँ सरस्वती की दोनों प्रिय बेटियाँ तिरंगे में लिपटकर पूरी गरिमा और गौरव के साथ जीवन की सार्थकता को सिद्ध कर प्रयाण कर गईं। भारत माता का आँगन सूना हो गया। दो दैवीय आवाजों का इस तरह खामोश हो जाना कि अब वे कोई नया जादू नहीं बिखेर सकेंगी, सोचकर मन पीड़ा से भर उठता है। लता जी और आशा जी भारत को ईश्वर के द्वारा दिया गया अनुपम उपहार थीं। ऐसा उपहार जिस पर हर भारतवासी को गर्व है, जिससे हर भारतवासी को प्रेम है, जिनके लिए हर भारतवासी के मन में आदर, अपनत्व है, जिन्हें सहेजकर रख लेने की कामना हर दिल में रही। अनेक विदेशी मित्र और शत्रु देशों के मन में यह कामना और लालसा रही कि काश ये अनमोल रत्न हमारे देश में होते। संगीत उनके जीवन यापन का साधन था और साध्य भी...। संगीत साधना और जीवन संघर्ष, दोनों ने उन्हें कुंदन बनाया... खरा सोना...। भारतीय समाज ही नहीं.. दुनिया भर को... मानव समाज को उन्होंने जो दिया वह अगण्य है उसे गिना नहीं जा सकता।

ऐसा कौन सा दिल है जो उनके गीतों के मरहम से अछूता रह गया हो...? आगे भी सुख–दुख के साथी उनके गीतों का खजाना धरोहर की तरह सुरक्षित और संरक्षित रहेगा, सदा जीवंत रहकर जीने का हौसला देगा। इसलिए तो उनके जाने को केवल देहान्त कहा, देहावसान कहा । यानी की सिर्फ देह की यात्रा समाप्त हुई है। लता जी, आशा जी कालजयी सुरसाधिका हैं। उन्हें, उनके गीतों को और उनकी यशस्वी, दीर्घायु स्मृतियों को न तो काल रूपी मृत्यु मिटा सकती है न काल रूपी समय उसे धुंधला कर सकता है। मगर...

इस सत्य को स्वीकार करना होगा कि अब ये दोनों देवियाँ अनुभवगम्य हो गई हैं, दरस और परस की सीमा से परे...। मन कचोटता है पर कहना होगा कि भारतीय संगीत जगत के उस एक ऐसे चैतन्य प्राणवंत युग का अन्त हो गया जिसकी जड़ों में, रोम रोम में भारतीय साँस्कृतिक मूल्य प्रवाहित होते थे। जिसमें मर्यादा, निष्ठा अनुशासन, नैतिकता, विनम्रता, उदारता, करुणा, प्रेम समाहित था। नारी शक्ति वंदन और पृथ्वी दिवस मनाते हुए साधना के ऐसे मूर्तिमान रूपों को प्रणाम और भावभीनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि...।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम, यह भारी–भरकम नामधारी बिल पास नहीं हुआ। राजनैतिक प्रभाव, राजनीतिज्ञों का प्रभाव, व्यक्तित्व और कृतित्व से जन समूह परिचित हुआ एक बार फिर...। बुद्धिजीवी संभ्रांत वर्ग व्यंग्यपूर्ण मुस्कुराहट के साथ चुप्पी साध गया... नो कमेंट...।

कबीर का एक दोहा याद आ गया–

कबिरा आप ठगाइये और न ठगिए कोय।
आप ठगे सुख ऊपजे और ठगे दुख होय।।

सत्ता पक्ष–विपक्ष – निष्पक्ष की अपनी–अपनी तरह की क्रांति, आंदोलन, रैलियाँ और प्रवचन जारी हैं। मुझे तो आरक्षण शब्द से ही विरक्ति है। मेरा मानना है कि योग्यता, ईमानदारी यानी सत्यनिष्ठा तथा उचित अनुचित का विवेक रखने वाला, समय के महत्व को समझने वाला अनुशासन, यह ऐसी फिटकरी हैं कि जो भ्रष्टाचार के गंदे तालाब को साफ कर देंगी। लेकिन इनका उपयोग करने के लिए आत्मदृढ़ता चाहिए, निःस्वार्थ, निष्कपट, उदार मन चाहिये। आज के दौर में यह कहाँ मिलेगा? आरक्षण विकलांगता का प्रतीक है कि अब भी आप कमजोर और अयोग्य हैं हम आपको बैसाखी दे रहे हैं। आप दया और कृपा के पात्र हैं। आप हमारे एहसान तले दबे रहिए और हमारी हाँ में हाँ मिलाते रहिए। जीवन भर गर्दन ऊँची और नजर ऊँची करके बात मत कीजिए। आरक्षण से अधिकांश अयोग्य, आत्मसम्मान हीन और विवेकहीनों को जो कर्तव्य सौंपे जाते हैं उसे वे अपना अधिकार मानकर उसका दुरुपयोग करते हैं।

उदाहरण के तौर पर वर्तमान में सरपंचों द्वारा किए गए भ्रष्टाचारों की खबरों को ही लें। जहाँ महिला सरपंच बनाई गई हैं, सामान्य रूप में या आरक्षण के नियम से, वहाँ उनके पतियों ने ही या अन्य दबंगों ने सत्ता चलाते हुए भ्रष्टाचार किया, जिसे वे जानती भी नहीं कि उनके पति या अन्य क्या कर रहे हैं। या जानती भी हैं तो विरोध नहीं कर सकतीं, वे केवल उनके कहे अनुसार निर्देशित स्थान पर हस्ताक्षर कर देती हैं। अयोग्य, दुर्बल मनोमस्तिष्क वाली, अशिक्षित या अल्पशिक्षित स्त्रियाँ अनारक्षित या आरक्षण के नाम पर सत्ता में आएँगी तो यही होगा (पुरुषों के साथ भी यही बात लागू होती है)। एक सुदृढ़ प्रशासन के लिए यह आवश्यक है कि योग्य और शिक्षित स्त्रियाँ चाहे जितनी संख्या में हों, चाहे जिस वर्ग, जाति, स्थान की हों अगर वे आवेदक हैं तो उन्हें उनका प्राप्य मिलना चाहिए। स्त्री–पुरुष एक दूसरे का स्थान न छीनें लेकिन स्वस्थ प्रतियोगिता के द्वारा वे अपना अधिकार प्राप्त कर सकें तभी वे एक–दूसरे का सम्मान कर सकेंगे। सही मायनों में जाति–वर्ग का भेद मिटेगा और एकता समानता स्थापित होगी।

स्त्रियों के भीतर अगर आत्मदृढ़ता, आत्मबल और आत्मविश्वास हो तो वे समाज में, राष्ट्र में, विश्व में अपना स्थान स्वयं बना लेती हैं, बशर्ते भाग्य भी दाहिने होकर साथ दे। ऐसी स्त्रियाँ हमारे देश में और विश्व में भी हुई हैं जो हर तरह के स्त्री विमर्श और आरक्षण के मुद्दों से परे, बहुत ऊँचाई पर विशिष्ट स्थान बना सकीं जिनके सामने पुरुष नत मस्तष्क हुए। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा जी, सुर साम्राज्ञी लता जी, आशा जी तो ज्वलन्त उदाहरण हैं ही। राजनीति के क्षेत्र में अनेक नाम हैं। बात काटने के लिए, तर्क करने वाले तो कुछ न कुछ कहेंगे ही... इसलिए लोक में कहा जाता है कि बर्तनों का मुँह तो ढक्कन से बंद किया जा सकता है लेकिन आदमियों का नहीं। वे तो हर हाल में बोलेंगे। जोर–शोर से स्त्रियों की योग्यता को दरकिनार करते हुए बोलेंगे कि इस स्त्री की उपलब्धि के पीछे यह पुरुष है या रहा है। स्त्रियाँ अपनी दम पर कुछ नहीं कर सकतीं।

अब समय बदला तो है पर एक तरह की विकृति के साथ...। बेटियाँ साइकिल से फाइटर प्लेन तक चला रही हैं, हर क्षेत्र में पदस्थ हैं उन्होंने अपनी योग्यता से या आरक्षण से जैसे भी जो स्थान प्राप्त किया है वहाँ उनका अपने अस्तित्व और अस्मिता को सुरक्षित बचाए रखने का संघर्ष प्रबल है, भारी है। पुरुषवादी सोच, उनकी ईर्ष्या और स्वार्थ पदस्थ स्त्रियों को भी चैन से जीने का अवकाश नहीं देती । पुरुष, स्त्री को